INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा में योगदान पर अध्ययन
(Study on Contribution of Swami Vivekananda in Education)

Kanchan Jain
Research Scholar,
Department of Education,
Mangalayatan University,
Aligarh (Uttar Pradesh, India)

Dr. Yatendra Pal
Associate professor,
Department of Education
Mangalayatan University,
Aligarh (Uttar Pradesh, India)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2022-27124616/IRJHIS2207007

प्रस्तावना :

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 को हुआ, घर में सब उन्हें नरेंद्र दत्त कहते थे। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे। वे अपने पुत्र नरेंद्र को भी अंग्रेजी पढ़ाकर पाश्चात्य सभ्यता के ढंग पर ही चलाना चाहते थे। नरेंद्र की बुद्धि बचपन से बड़ी तीव्र थी और परमात्मा को पाने की लालसा भी प्रबल थी। इस हेतु वे पहले ब्रह्म समाज में गए किंतु वहां उनके चित्त को संतोष नहीं हुआ, सन् 1884 में विश्वनाथ दत्त की मृत्यु हो गई। घर का भार नरेंद्र पर आ पड़ा। घर की दशा बहुत खराब थी, नरेंद्र का विवाह नहीं हुआ था। अत्यंत गरीबी में भी नरेंद्र बड़े अतिथि-सेवी बने रहे । स्वयं भूखे रहकर अतिथियों को भोजन कराते, स्वयं बाहर वर्षा में रातभर भीगते-ठिठुरते पड़े रहते और अतिथि को अपने बिस्तर पर सुला देते।

रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा सुनकर नरेंद्र उनके पास पहले तो तर्क करने के विचार से ही आए थे परन्तु परमहंस जी ने देखते ही पहचान लिया कि ये तो वही शिष्य है जिसका वह इंतजार कर रहे है। परमहंस जी की कृपा से इनको आत्म-साक्षात्कार हुआ फलस्वरूप नरेंद्र परमहंस जी के शिष्यों में प्रमुख हो गए एवं संन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ।

स्वामी विवेकानन्द अपना जीवन अपने गुरुदेव स्वामी रामकृष्ण परमहंस को समर्पित कर चुके थे। गुरुदेव के शरीर-त्याग के दिनों में अपने घर और कुटुंब की नाजुक हालत की परवाह किए बिना ही स्वयं के भोजन की परवाह किए बिना ही गुरु सेवा में हमेशा हाजिर रहे। गुरुदेव का शरीर अत्यंत रुग्ण हो गया था। कैंसर के कारण गले में से थूंक, रक्त, कफ आदि निकलता था। इन सबकी सफाई वे खूब ध्यान से करते थे।

एक बार किसी ने गुरुदेव की सेवा में घृणा और लापरवाही दिखाई तथा घृणा से नाक भौंहें सिकोड़ीं। यह देखकर विवेकानंद को गुस्सा आ गया। उस गुरुभाई को पाठ पढ़ाते हुए और गुरुदेव की प्रत्येक वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते

हुए उनके बिस्तर के पास रक्त, कफ आदि से भरी थूकदानी उठाकर पूरी पी गए।

गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वे अपने गुरु के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शों की उत्तम सेवा कर सके। गुरुदेव को वे समझ सके, स्वयं के अस्तित्व को गुरुदेव के स्वरूप में विलीन कर सके। वो था। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं स्थापित कीं। अनेक अमेरिकन विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। वे सदा अपने को गरीबों का सेवक कहते थे। भारत के गौरव को देश-देशांतरों में उज्ज्वल करने का उन्होंने सदा प्रयत्न किया। 4 जुलाई सन् 1902 को उन्होंने देह त्याग किया।

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा के प्रति विचार :

स्वामी विवेकानंद ने अंग्रेजों के शासनकाल में भी अपने शैक्षिक विचारों से देश के लोगों के बीच राष्ट्रवाद की सोच को बढ़ावा दिया एवं स्वामी विवेकानंद के विचारों ने देशवासियों को स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए भी प्रेरित किया। स्वामी विवेकानंद ने स्वंय मनुष्य के ज्ञान और सीख पर भी काफी विचार लिखे-

पढ़ने के लिए जरूरी है एकाग्रता, एकाग्रता के लिए जरूरी है ध्यान, ध्यान से ही हम इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते है।

1. **ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।**
2. **उठो और जागो और तब तक रुको नहीं जब तक कि तमु अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते।**
3. **जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।**
4. **पवित्रता, धैर्य और उद्यम- ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहता हूं।**
5. **लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहांत आज हो या युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो।**
6. **क्या तुम नहीं अनुभव करते कि दूसरों के ऊपर निर्भर रहना बुद्धिमानी नहीं हैं। बुद्धिमान व्यक्ति को अपने ही पैरों पर दृढतापूर्वक खड़ा होकर कार्य करना चहिए।**
7. **तुम्हें कोई पढ़ा नहीं सकता, कोई आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुमको सब कुछ खुद अंदर से सीखना है। आत्मा से अच्छा कोई शिक्षक नही है।**
8. **सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।**
9. **बाहरी स्वभाव केवल अंदरूनी स्वभाव का बड़ा रूप हैं।**
10. **ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो हम ही हैं जो अपनी आंखों पर हांथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।**
11. **विश्व एक विशाल व्यायामशाला है जहां हम खुद को मज़बूत बनाने के लिए आते हैं।**
12. **शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु हैं। विस्तार जीवन है, संकुचन मृत्यु हैं। प्रेम जीवन है, द्वेष मृत्यु हैं।**
13. **किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या ना आए-आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।**

14. किसी की निंदा न करें। अगर आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं, तो जरूर बढ़ाएं। अगर नहीं बढ़ा सकते हैं, तो अपने हाथ जोड़िए, अपने भाइयों को आशीर्वाद दीजिए और उन्हें उनके मार्ग पर जाने दीजिए।
15. कभी मत सोचिए कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है। ऐसा सोचना सबसे बड़ा विधर्म है। अगर कोई पाप है, तो वो यही है; ये कहना कि 'तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं।
16. अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करे, तो इसका कुछ मूल्य है अन्यथा ये सिर्फ बुराई का एक ढेर है और इससे जितना जल्दी छुटकारा मिल जाए, उतना बेहतर है।
17. जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो, ठीक उसी समय पर उसे करना ही चाहिए, नहीं तो लोगों का विश्वास उठ जाता है।
18. उस व्यक्ति ने अमरत्व प्राप्त कर लिया है, जो किसी सांसारिक वस्तु से व्याकुल नहीं होता।
19. हम वो हैं, जो हमें हमारी सोच ने बनाया है इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं। शब्द गौण हैं, विचार रहते हैं, वे दूर तक यात्रा करते हैं।

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा में योगदान

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के सात उद्देश्य निश्चित किए।

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास
3. समाज सेवा की भावना का विकास
4. नैतिक एवं चारित्रिक विकास
5. व्यावहारिक विकास
6. राष्ट्रीय एकता एवं विश्वबन्धुत्व का विकास
7. आध्यात्मिक विकास

शिक्षा की पाठ्यचर्या के बारे में स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। इस सन्दर्भ में शिक्षा की पाठ्यचर्या में वे सब विषय एवं क्रियाएँ सम्मिलित की जानी चाहिए जोकि मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए अति आवश्यक हैं। दूसरी बात यह ,कि देश-विदेश, जहाँ से भी कुछ अच्छा मिले उसे पाठ्यचर्या में स्थान दिया जाए और तीसरी बात यह कि मनुष्य, समाज अथवा राष्ट्र के भौतिक विकास के लिए पाश्चात्य् विज्ञान एवं तकनीकी को मुख्य स्थान दिया जाना चाहिए तथा उन्हें समझने के लिए अंग्रेजी भाषा को स्थान दिया जाना आवश्यक है तथा मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के लिए भारतीय धर्म-दर्शन को पाठ्यचर्या का अनिवार्य विषय बनाया जाने पर भी जोर दिया। स्वामी विवेकानंद ने मनुष्य के भौतिक विकास की दृष्टि से मातृ भाषा, प्रादेशिक भाषा, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं को कला, संगीत, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान, गृह विज्ञान, कृषि विज्ञान, गणित, तकनीकी, और उद्योग शिक्षा विषयों को और खेल-कूद, व्यायाम, योगासन और समाज सेवा क्रियाओं को और उसके आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से साहित्य, धर्म, दर्शन, और नीतिशास्त्र विषयों को तथा भजन, कीर्तन, सत्संग एवं

ध्यान की क्रियाओं को पाठ्यचर्या में स्थान देने पर जोर दिया।

ना जाने क्यों? भारतीय संस्कृति के पोषक होते हुए भी स्वामी विवेकानंद ने सांस्कृतिक विकास पर बल क्यों नहीं दिया? ये धर्म और संस्कृति को अभिन्न समझते थे।

उस समय तक अपना देश परतन्त्र था तथा शासनतन्त्र और नागरिकता की शिक्षा का प्रश्न स्वामी विवेकानंद के मस्तिष्क में कैसे आता अन्तर्राष्ट्रीय भी इसी युग का नारा है। इनके युग में यह विश्वबन्धुत्व के रूप में जाना समझा जाता था।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार अनुशासन का अर्थ है आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना एवं जब तक कि मनुष्य आत्म तत्व की अनुभूति नहीं करता, तब तक उसके द्वारा निर्दिष्ट होने का प्रश्न नहीं उठता। आत्म तत्व की अनुभूति करने में उसका सम्पूर्ण जीवन लग सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालय अनुशासन की बात स्वामी विवेकानंद जी नहीं कर पाए,विद्यालय अनुशासन का हमारी दृष्टि से यह अर्थ है कि अध्यापक और बालक सभी अपने प्राकृतिक तौर पर स्वयं को स्वनियन्त्रण कर सकें। सामाजिक नियम एवं आदर्शों के अनुकूल आचरण करने के लिए अन्दर से प्ररित हों, एवं आत्मा की अनुभूति करने के लिए निरन्तर अग्रसर रह सके।

स्वामी विवेकानंद न केवल एक सामाज सुधारक थे बल्कि एक सुयोग्य शिक्षक भी थे। उनके शैक्षणिक विचारों में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

स्वामी विवेकानंद शिक्षा के अनुसार जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करना चाहिए - सामग्री, शारीरिक, नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक, क्योंकि शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा पूर्णता का अभिव्यक्ति जो पहले से ही मनुष्य में विद्यमान है।

उनका सुझाव था कि शिक्षा को मानव मस्तिष्क में सुधार करने का लक्ष्य होना चाहिए यह मनुष्य के मस्तिष्क में कुछ तथ्यों को भरने के लिए नहीं होना चाहिए। शिक्षा जीवन की तैयारी के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने एक बार कहा था कि शिक्षा आपके दिमाग में रखी गई जानकारी की मात्रा नहीं है। हमारे पास जीवन-निर्माण, मानव निर्माण, चरित्र बनाने, विचारों का आकलन आवश्यक रूप से होना चाहिए।

यदि आपने पांच विचारों को अपने जीवन में समेट लिया एवं उन्हें अपना जीवन और चरित्र बना दिया है, तो आपके पास किसी भी व्यक्ति की तुलना में अधिक शिक्षा है जो दिल से पूरा पुस्तकालय प्राप्त कर चुकी है। अगर **शिक्षा सूचना के समान थी, तो पुस्तकालय दुनिया में सबसे बड़ा ऋषि और ऋषि विश्वकोश बन जाएंगे।**

विवेकानंद ने प्रचार किया कि हिंदू धर्म का सार आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत दर्शन में सबसे अच्छा व्यक्त किया गया है। और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए स्वामी विवेकानंद शिक्षण-शिक्षण प्रक्रिया में ध्यान और एकाग्रता पर अधिकतम जोर देना अपना लक्ष्य बताते थे।

सामान्य शिक्षा के अभ्यास में, क्योंकि यह योग के अभ्यास में है, पांच बुनियादी सिद्धांतों में जरूरी हैं-

1.उद्देश्य

2.विधि

3. विषय

4.सिखाया

5.शिक्षक।

उनका तथ्य है, ध्यान और एकाग्रता का अभ्यास करके, मानव मस्तिष्क में सभी ज्ञान का भी अभ्यास किया जाए।

शिक्षा, राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को फिर से अभिविन्यास देकर, स्वामी विवेकानंद समाज की बुराइयों को घटाना चाहते थे। परिवर्तन के लिए, उन्होंने शिक्षा पर एक शक्तिशाली हथियार के रूप में तनाव डाला। शिक्षा का सार्वभौमीकरण प्रदान करने के समर्थक स्वामी विवेकान्द शिक्षा में किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरुद्ध खड़े रहते थे। वे इस सत्य को भली-भांति जानते थे कि यदि शिक्षा ग्रहण करने का अवसर अगर कुछ विशेष व्यक्तियों तक ही सीमित हो या किसी भी कारण से समाज का बड़ा भाग शिक्षा की प्राप्ति से वंचित रह गया जाता है, तो देश का सम्पूर्ण विकास संभव नहीं हो पायेगा। स्वामी विवेकानंद के विचार में शिक्षा का प्रसार देश के कारखानों, खेल के मैदानों और खेतों, यहाँ तक कि देश में हर घर में होना चाहिए। यदि बालक विद्यालय तक नहीं आ पा रहे हैं, तो शिक्षकों को उन तक पहुँचना ही चाहिए।

विवेकानंद जी के अनुसार शिक्षा समाज के निर्धन व्यक्तियों को भी प्राप्त करने का अधिकार है । स्वामी विवेकानंद ने जनता के जीवन की परिस्थितियाँ को सुधारने के लिए शिक्षा का समर्थन किया। उनके अनुसार आम जनता को प्राप्त होने वाली इस सार्वभौमिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत प्रगति के साथ सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना था । स्वामी विवेकानंद ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल देने को कहा। समाज के कई अवसरों पर **स्वामी विवेकानंद ने विचार प्रकट करते हुए कहा,** कि जब तक स्त्रियों को अपने देश में यथोचित सम्मान प्राप्त नहीं होगा तब तक हमारा भारत प्रगति के शिखर तक नहीं पहुंच सकता।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, स्त्रियों को चरित्रवान, निडर और शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में विकसित करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए । स्वामी विवेकानंद के विचार से स्त्रियां न केवल पुरुषों के समान योग्य है बल्कि वह घर-परिवार में भी बराबर की भागीदारी के साथ कार्य करती हैं। स्त्रियों को किसी भी दृष्टि से पुरुष से हीन नहीं समझा जा सकता।

स्वामी विवेकानंद ने अपनी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाने वाली प्रणाली के महत्व को स्वीकार किया है एवं भौतिकता और पश्चिमी अंधानुकरण के कारण **मातृभाषा की अवहेलना** कर अंग्रेजी को बालमन पर थोपा जाता है। मातृभाषा का घर-परिवार और समाज में अधिकतम प्रयोग किया जाना चाहिए एवं किया भी जाता है। ऐसे में स्वाभाविक है, कि किसी विदेशी भाषा को रटने की बजाय मातृभाषा के माध्यम से ही बालकों को दीर्घकालीन और अधिकतम ज्ञान प्राप्त कराया जा सकता है। बालक मातृभाषा के माध्यम से ही रचनात्मक और कलात्मक विचारों का प्रसार समाज में कर सकने अधिक प्रभावी होगा ।

रचनात्मकता एवं संस्कार विरोधी तथा अव्यवहारिक शिक्षा व्यवस्था से स्वामी विवेकानंद बेहद असंतुष्ट

दिखाई पड़ते थे क्योंकि उनकी दृष्टि में यह शिक्षा भारत के नागरिकों के लिए व्यावहारिक और उपयोगी नहीं थी, अंग्रेजी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भारत अथवा भारतीयों का हित करना नहीं बल्कि भारत पर अंग्रेजों के शासन को स्थायी रखने के लिए भारतीयों में से ही क्लर्क खोजना था। उनके विचार में मैकालेवादी शिक्षा व्यवस्था व्यक्ति को आत्म-निर्भर न बनाकर दूसरे पर निर्भर बनाती है और उसके आत्मविश्वास को समाप्त कर देती है। इससे भी बढ़कर अंग्रेजी शिक्षा का मूल्य-विरोधी स्वरूप, व्यक्ति के धार्मिक और आध्यात्मिक विश्वासों को समाप्त कर उसे एक नकारात्मक व्यक्तित्व के रूप में परिणत कर देता है। इसलिए विवेकानंद जी अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में भारतीय दृष्टिकोण और सामाजिक आदर्शों के अनुसार आमूल-चूल परिवर्तन के इच्छुक थे। नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से विहीन शिक्षा प्रणाली किसी भी समाज को कैसे उन्नति की ओर की ओर ले जा सकती है?

स्वामी विवेकानंद ने इसलिए अनिवार्य रूप से शिक्षा में गीता, उपनिषद और वेद में निहित नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के समावेश की आवश्यकता पर जोर दिया। उनके लिए धर्म, कर्मकांड अथवा धार्मिक रीति -रिवाज नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए आत्मज्ञान तथा आत्मबोध का कारक है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वास्तविक धर्म किसी समाज, जाति, नस्ल, वंश, स्थान, समय इत्यादि तक सीमित नहीं है बल्कि उसका लक्ष्य सामाजिक कल्याण है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार नैतिकता और धर्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और इन मूल्यों से प्रेरित शिक्षा ही विद्यार्थियों का सर्वांगींण विकास करने में सहायता प्रदान कर सकती है।

संदर्भ :

1. महापात्रा 2009 , पृ. 14
2. पियाज़ा 1978 , पृ. 59
3. चट्टोपाध्याय 1999 , पी। 314
4. चट्टोपाध्याय 1999 , पृ. 299
5. चट्टोपाध्याय 1999 , पी। 326
6. दत्त 1999 , पृ. 121
7. चट्टोपाध्याय 1999 , पृ. 316
8. "विवेकानंद पुस्तकालय ऑनलाइन" । विवेकानंद.नेट । 12 दिसंबर 2012 को लिया गया ।
9. भारती, केएस (1998)। प्रख्यात विचारकों का विश्वकोश: विवेकानंद का राजनीतिक विचार । अवधारणा प्रकाशन कंपनी। आईएसबीएन 978-81-7022-709-0.
10. चौबे, सरयू प्रसाद (2005). भारत पर शिक्षा पर हालिया दर्शन । अवधारणा प्रकाशन कंपनी। आईएसबीएन 978-81-8069-216-1.
11. विवेकानंद, स्वामी (2006)। अपरिहार्य विवेकानंद: हमारे समय के लिए एक संकलन । ओरिएंट ब्लैकस्वान। आईएसबीएन 978-81-7824-130-2.
12. महापात्रा, अमूल्य रंजन (2009)। स्वराज - गांधी, तिलक, अरबिंदो, राजा राममोहन राय, टैगोर और विवेकानंद के विचार । पठनीय। पी। 14. आईएसबीएन 978-81-89973-82-7.
13. पियाज़ा, पॉल (1978)। क्रिस्टोफर ईशरवुड: मिथ एंड एंटी-मिथ । कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस। आईएसबीएन 978-0-231-51358-6.

14. चट्टोपाध्याय, राजगोपाल (1999)। भारत में स्वामी विवेकानंद: एक सुधारात्मक जीवनी । मोतीलाल बनारसीदास। आईएसबीएन 978-81-208-1586-5.
15. दत्त, कार्तिक चंद्र (1999)। भारतीय लेखकों में से कौन है, 1999: पूर्वाह्न । साहित्य अकादमी। आईएसबीएन 978-81-260-0873-5.
16. विवेकानंद.नेट । 11 अप्रैल 2012 को लिया गया ।
17. "भजनानंद (2010), अद्वैत वेदांत के चार बुनियादी सिद्धांत , पृष्ठ 3" (पीडीएफ) । 28 दिसंबर 2019 को लिया गया ।
18. डी मिशेलिस 2005 .
19. "स्वामी विवेकानंद: एक लघु जीवनी" । www.oneindia.com । 3 मई 2017 को लिया गया ।
20. "जीवन इतिहास और स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं" । 3 मई 2017 को लिया गया ।
21. किंग 2002 ।
22. रामबचन 1994 ।
23. मिशेलिस 2004 , पी। 19-90, 97-100।
24. "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस: स्वामी विवेकानंद ने पश्चिम में प्राचीन भारतीय शासन को लोकप्रिय बनाने में कैसे मदद की" । 21 जून 2017।
25. फ़ुएरस्टीन 2002 , पृ. 600.
26. सिमन, स्टेफनी (2010)। सूक्ष्म शरीर: अमेरिका में योग की कहानी । न्यूयॉर्क: फरार, स्ट्रॉस, और गिरौक्स । पी। 59. आईएसबीएन 978-0-374-23676-2.
27. क्लार्क 2006 , पृ. 209.
28. वॉन डेंस 1999 , पृ. 191.
29. दत्त 2005 , पृ. 121.
30. "राष्ट्रीय युवा दिवस 2022 पर स्वामी विवेकानंद के बारे में जानें" । एसए न्यूज चैनल । 11 जनवरी 2022 । 12 जनवरी 2022 को लिया गया ।
31. "राष्ट्रीय युवा दिवस 2022: स्वामी विवेकानंद के चित्र, शुभकामनाएं और उद्धरण जो आज भी हमें प्रेरित करते हैं!" . समाचार18 . 12 जनवरी 2022 । 12 जनवरी 2022 को लिया गया ।
32. विराजानंद 2006 , पृ. 21.
33. पॉल 2003 , पृ. 5.
34. बनहट्टी 1995 , पृ. 1.
35. स्टीवन केम्पर (2015)। राष्ट्र से बचाया गया: अंगारिका धर्मपाल और बौद्ध जगत । शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस। पी। 236. आईएसबीएन 978-0-226-19910-8.
36. "देवदत्त पटनायक: दयानंद और विवेकानंद" । 15 जनवरी 2017।